शुकर

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

शुकर अदा करने के तरीके

हमारी हालत ये हे कि अगर कोई हम से अगर पूछे कि सुनावो काम कैसा हे? हम जवाब देते हे कि बस चल रहा हे, हालाके ये वो आदमी कह रहा हे, जिसकी कई दुकाने हे कई मकान हे, उस्के पास लाखो की तादाद मे माल पडा हे, लाखो की जायदाद का मालिक हे.

ए अल्लाह के बन्दे क्यू तेरी जुबान छोटी हो गई, तेरी जुबान से क्यू तेरे रब की तारीफे नही अदा होती, अगर कोई वजिर तेरे बच्चे की नौकरी लगवादे तो जगह जगह उसकी तारीफे करता फिरता हे, कि फला ने मेरे बेटे की नौकरी लगवादी, उस बन्दे ने तो तुझ पर छोटा सा एहसान किया और तु उसका इतना एहसानमंद हो गया, तेरे रब के तुझ पर कितने

एहसानात हे, तु उन एहसानात की तारीफ क्यू नही करता.
तुझे तो ये चाहिये था कि युं कहता कि मेरे अल्लाह का करम हे, मेरी इतनी औकात नही थी, मेरे रब ने मुझे इतना अता किया हे, मे तो इस काबिल नही था, मे अपने रब का किन अलफाज से शुकर अदा करू, हम अपने रब के गुन गया करे, कहा करे यकीनन मेरे रब ने मुझ पर इतना करम किया, मे तो इस काबिल नही था, मे तो सारी ज़िन्दगी सजदे मे पडा रहु और इबादत मे लगा रहु तो भी अपने मालिक का शुकर अदा नही कर सकता.
हम इस किसम का जवाब दे जिससे अपने रब की अजमते जाहिर हो, और उसकी तारीफे हो, अगर आप गौर करेंगे तो आप को अपने आस पास कितनी ही नेमते ऐसी नजर आयेगी कि आप खुद ही कहेंगे कि मेरे करीम रब के मुझ पर कितने एहसानात हे, मे तो उसका शुकर भी नही अदा कर सकता.

चार तरीको से शुकर की आदत डालिये

हर नेमत पर शुकर की आदत डालिये इस पर नेमत की तरक्की का वादा हे और गुनाहो से भी महफूज रहेगा, शुकर की चार सूरते हे,

१. एहसासे शुकर यानी दिल मे ये ख्याल करना कि बगैर इस्तिहकाक के अता हुवा हे ये एहसास शुकर हे.
२. जबान से अल्लाहुम्म लक लहम्द वलकश शुकर कहना.
३. नेमत का सही इस्तेमाल हो मिसाल के तौर पर बिनायी को अच्छे कामो मे लगाये किसी को हसद की नजर से, हकारत की नजर से, शहवत की नजर से अगर देखा तो ये नाशुक्री होगी, क्युकी नेमत का इस्तेमाल गलत हो गया.
४. नेमत जिस वास्ते से हासिल हो उस्का भी शुकर अदा करना, जबान से जजाकल्लाह कहना, जो शख्स शुकर के ये चार आमाल करेगा गुनाहो से भी महफूज रहेगा.

सिफते शुकर पर एक अजिब वाकिया

हजरत अहमद हर्ब (रह) के पडोस मे एक शख्स के यहा चोरी हो गई, आप अपने दोस्तो के साथ उसको दिलासा देने के लिये तशरीफ ले गये, पडोसी ने बहुत खुश्दीली से उनका इस्तेकबाल किया, हजरत अहमद हर्ब (रह) ने बताया कि हम तुम्हारे यहा चोरी हो जाने का अफसोस करने आये हे.

पडोसी बोला मे तो अल्लाह का शुकर अदा कर रहा हू और मुझ पर उस्के ३ शुकर वाजिब हो गये, एक

ये कि दुसरो ने मेरा माल चुराया हे मेने नही, दुसरे ये कि अभी आधा माल मेरे पास मौजूद हे, तीसरे ये कि मेरी दुन्या को नुकसान पहूचा हे और दीन मेरे पास हे, यानी अल्लाह का बन्दा वो हे जो परेशानी मे भी शुकर करे.

वाकिया- एक शख्स सहल बिन अब्दुल्लाह के पास आया और कहा चोर मेरे घर मे घूस कर सारा समान ले गया, आप ने फरमाया अल्लाह का शुकर अदा करो, अगर चोर (शैतान) तुम्हारे दिल मे घूस कर तौहीद खराब कर देता तो तु किया कर सकता था कहते हे कि आंखो का शुकर ये हे कि तु लोगो के ऐबो पर परदा डाले, और कान का शुकर ये हे कि जो ऐब की बात सुने उसपर परदा डाले.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.